झारखंड के पर्व–त्योहार

सरहुल

विशेषता :– यह जनजातियो का सबसे बड़ा पर्व है ।

अन्य नाम

- ➢ खद्दी – (उरावं जनजाति)
- ➢ बा परब – (संथाल जनजाति)
- ➢ जकोर – (खड़िया जनजाति)

- यह प्रकृति से संबंधित त्योहार है ।
- यह चैत/चैत्रमाह के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है ।
- इस पर्व मे साल के वृक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । आदिवासी ऐसा मानते है कि साल के वृक्ष मे उनके देवता बोंगा निवास करते है
- यह फूलो का त्योहार है ।
- यह पर्व बसंत के मौसम मे मनाया जाता है । इस समय साल के वृक्षो पर नये फूल खिलते है ।
- यह पर्व चार दिनो तक मनाया जाता है :–

पहला दिन – मछली के अभिषेक किए हुए जल को घर मे छिड़का जाता है ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

दूसरा दिन –उपवास रखा जाता है तथा गांव का पूजारी गांव के हर घर की छत पर साल के फूल रखता है ।

तीसरा दिन :– पाहन (पुरोहित) द्वारा सरना (पूजा स्थल) पर सरई के फूलो (सखुए का कुंज) की पूजा की जाती है तथा पाहन उपवास रखता है ।

- साथ ही मुर्गी की बलि दी जाती है तथा चावल और बलि की मुर्गी का मांस मिलाकर सुड़ी नामक खिचड़ी बनायी जाती है , जिसे प्रसाद के रूप मे वितरित किया जाता है ।

चौथा दिन :– गिड़िवा नामक स्थान पर सरहुल फूल का विसर्जन करते है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- एक परंपरा के आधार पर इस पर्व के दौरान गांव का पुजारी मिट्टी के तीन पात्र लेता है और उन्हे ताजे पानी से भरता है । अगले दिन प्रातः वह मिट्टी के तीनो पात्रो को देखता है ।
- यदि पात्रो मे पानी का स्तर घट गया है तो वह मिट्टी के तीनों पात्रो को देखता है । यदि पात्रों मे पानी का स्तर घट गया है तो वह अकाल की भविष्यवाणी करता है और यदि पानी का स्तर सामान्य रहा है तो इसे उत्तम वर्षा का संकेत माना जाता है ।
- सरहुल की पूजा के दौरान ग्रामीणो द्वारा सरना (पूजा स्थल) को घेरा जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2. मण्डा

विशेषता :–

- इसमें महादेव (शिव) की पूजा होती है ।
- यह पर्व बैशाख माह के अक्षय तृतीया को आरंभ होता है ।
- यह पर्व आदिवासी और सदान दोनो मे प्रचलित है ।
- इस पर्व मे उपवास रखने वाले पुरूष व्रती को भगता और महिला व्रती का सोखाताइन कहते है ।
- झारखंड मे महादेव (शिव) की सबसे कठोर पूजा है ।
- इस पर्व के दौरान भोगताओं को रात मे घूप–धवन की अग्नि शिखाओं के ऊपर उल्टा लटकाकर झूलाया जाता है , जिसे धुवांसी कहा जाता है।
- इस पर्व मे भोगताओं को दहकते हुए अंगारों पर चलना होता है , जिसे फूल–खूंदी कहा जाता है ।
- इस पर्व के दौरान कही–कही लोहें से निर्मित अंकुश को रस्सी से बांधकर झुलाया जाता है । तथा उससे भगता लोगों की पीठ पर छेद कर दिया जाता है ।
- इस दौरान भगता लोगों की मां अथवा बहन भगवान शिव की अराधना करते रहती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

3. करमा

विशेषता :–

- यह प्रकृति संबंधी त्योहार है ।
- इस त्योहार का प्रमुख संदेश कर्म की जीवन मे प्रधानता है ।
- यह आदिवासी व सदानों मे समान रूप से प्रचलित है ।
- इस पर्व मे भाई के जीवन की कामना हेतु बहन द्वारा उपवास रखा जाता है । यह पर्व हिन्दुओं के भईया दूज ही भांति भाई–बहन के प्रेम का पर्व है ।
- यह पर्व भाद्रपद (भादो) माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- इस त्योहार मे नृत्य के मैदान (अखड़) मे करम वृक्ष की दो डालियां गाड़ दी जाती है तथा पाहन द्वारा लोगो को करमा कथा (करमा एंव धरमा नामक भाईयो की कथा) सुनायी जाती है ।
- इस पर्व के दौरान रात भर नृत्य–गान का कार्यक्रम किया जाता है ।
- मुण्डा जनजाति मे करमा की दो श्रेणियां है ।
    - राज करमा – घर आंगन मे की जाने वाली पारिवारिक पूजा
    - देश करमा – अखरा मे की जाने वाली सामूहिक पूजा

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- मुण्डाओं मे मान्यता है कि इस पर्व के दौरान करम गोसाई से मांगी गयी हर मन्नत पूरी होती है ।
- मुण्डा जनजाति की कुंआरी लड़कियां इस पर्व मे एक बालू भरी टोकरी में कुर्थी , जौ, गेहूं , मकई , उड़द , चना तथा मटर सात प्रकार के अनाजो की ' जावा ' उगाने की प्रथा का पालन करती है ।
- इस टोकरी को पूजा स्थल मे रखकर जवा कर प्रसाद वितरित किया जाता है तथा अगले दिन सूर्योदय से पूर्व करम डाली को नदी या तालाब मे विसर्जित कर दिया जाता है ।

4. सोहराई

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

विशेषता :–

- यह पर्व दीपावली के दूसरे दिन मनाया जाता हैं ।
- इसका संबंध जानवर धन से है । अतः यह पर्व मवेशियों को नहलाकर उनकी पूजा की जाती है ।
- पौष माह मे फसल कट जाने के बाद यह पर्व मनाया जाता है ।
- यह झारखंड मे संथाल जनजाति का सबसे बड़ा पर्व है।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- पर्व को मानने से पूर्व जनजाति समुदायों द्वारा अपने घरों की दीवारो पर पेंटिंग भी की जाती है । पेंटिंग हेतु कृत्रिम रंगो के स्थान पर प्राकृतिक पदार्थो (पत्तियो , चावल , कोयला आदि) का प्रयोग किया जाता है ।
- यह पर्व पांच दिनो तक चलता है –

पहला दिन – ' गोड टाण्डी ' (बथान) में जाहेरा एरा का आह्वान किया जाता है तथा रात मे प्रत्येक घर के युवक युवतियों ' गो–पूजन करते है।

दूसरा दिन – गोहाल पूजा की जाती है तथा गोशाला को अल्पना द्वारा सजाकर गाय को नहलाकर उसके शरीर को रंगा जाता है । गाय के सींग पर तेल व सिंदुर लगाकर उसके गले मे फूलो की माला पहनायी जाती है।

तीसरा दिन – पशुओ को धान की बाली एवं मालाओं से सजाकर खूंटा जाता है जिसे ' सण्टाऊ ' कहा जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुड़ें राष्ट्र सेवा का

चौथा दिन – युवक व युवतियां गांव से चावल , दाल , नमक मसाला आदि मांगकर जमा करते है ।

पांचवा दिन – गांव से एकत्रित चावल , दाल आदि से खिचड़ी बनाया जाता है । जिसे गांव के लोग साथ मे खाते है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

5. धान बुनी

विशेषता :–

- यह पर्व आदिवासी तथा सदान दोनो द्वारा मनाया जाता है ।
- इस समय धान बुवाई का प्रारंभ होता है ।
- इस पर्व मे हड़िया का तपान चढाया जाता है तथा प्रसाद वितरित किया जाता है ।

6. बहुरा

विशेषता :–

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- इसे राइज बहरलक के नाम से भी जाना जाता है ।
- यह पर्व भादो माह मे कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन मनाया जाता है।
- यह अच्छी वर्षा तथा संतान प्राप्ति हेतु महिलाओं द्वारा मनाया जाता है।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

7. कदलेटा

विशेषता :–

- यह पर्व भादों माह मे करमा से पहले मनाया जाता है ।
- यह मेढ़क भूत को शांत करने के लिए मनाया जाता है ।
- इस पर्व के दौरान पाहन पूरे गांव से चावल प्राप्त करके हड़िया उठाता है ।
- इसमें अखरा मे साल , भेलवा तथा केन्दु की डालियां रखकर पूजा की जाती है ।
- मान्यता के अनुसार पूजा के बाद लोग इस डाल को अपने खेतो मे गाड़ते है ताकि फसल को रोग मुक्त रखा जा सके ।
- इस पर्व में मुर्गी की बलि दी जाती है जिसे प्रसाद के रूप मे वितरित किया जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

8. टुसू

विशेषता :–

- यह सूर्य पूजा से संबंधित त्योहार है तथा मकर सक्रांति के दिन मनाया जाता है ।
- यह पर्व टूसु नाम की कन्या की स्मृति मे मनाया जाता है ।
- इस पर्व के दौरान लड़कियो द्वारा रंगीन कागज से लकड़ी या बांस के एक फ्रेम को सजाया जाता है ।
- इसे आस–पास के पहाड़ी क्षेत्र मे प्रवाहित किसी नदी में भेंट कर दिया जाता है ।
- इस पर्व के अवसर पर पंचपरगना मे टुसू मेला लगता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

9. फागुन

विशेषता :–

- यह फागुन पूर्णिमा को मनाया जाता है ।
- यह होली के समरूप त्योहार है ।
- इस पर्व के दौरान आदिवासी लोग पाहन के साथ मिलकर सेमल अथवा अरण्डी की डाली गाड़कर संवत जलाते है तथा मुर्गे की बलि देकर

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

हड़िया का तपान चढाते है , जबकि गैर–आदिवासी लोग संवत जलाते समय बलि नदी देते है ।

- इस पर्व के दूसरे दिन धुरखेल मनाया जाता है ।

10. मुर्गा लड़ाई

विशेषता :–

- इसे पुरातन सांस्कृतिक धरोहर के रूप मे मन्यता प्राप्त है ।
- इस खेल मे लोग सट्टा लगाते है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

11. आषाढी पूजा

विशेषता :–

- यह पर्व आदिवासी तथा सदान दोनो द्वारा मनाया जाता है ।
- आषाढ माह मे मनाये जाने वाले इस पर्व में घर–आंगन मे बकरी की बलि दी जाती है । तथा हड़िया का तपान चढ़ाया जाता है ।
- ऐसी मान्यता है कि इस पर्व से गांव मे चेचक जैसी बीमारी का प्रकोप नही होता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

12. रोग खेदन

विशेषता :–

- यह पर्व रोगो को गांव से बाहर निकालने हेतु मनाया जाता है ।

13. नवाखानी

विशेषता :–

- यह पर्व करमा पर्व के बाद मनाया जाता है ।
- नवाखनी का तात्पर्य है – नया अन्न ग्रहन करना ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

14. सूर्याही पूजा

विशेषता –

- अगहन माह मे आयोजित इस पर्व मे सफेद मुर्गे की बलि दी जाती है एवं हड़िया का तपान चढाया जाता है ।
- इस पर्व को किसी टांड़ (एक प्रकार का ऊंचा स्थान) पर मनाया जाता है ।
- इस पर्व मे केवल पुरूष भाग लेते है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

15. जितिया

- इस पर्व मे मां अपने पुत्र के दीर्घायु जीवन तथा समृद्धि के लिए व्रत रखती है ।

16. चण्डी पर्व

- यंह पर्व उराँव जनजाति द्वारा मनाया जाता है ।
- यह पर्व माघ पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है ।
- इस पर्व मे महिलाएं भाग नही लेती है तथा जिस परिवार मे कोई महिला गर्भवती हो उस परिवार का पुरूष भी इस पर्व मे भाग नही लेता है ।
- इस पर्व मे भाग लेने वाले पुरूष चाण्डी स्थल मे देवी की पूजा करते है
- इस पर्व मे सफेद व लाल मुर्गा तथा सफेद बकरे की बलि दी जाती है

17. देव उठान

विशेषता –

- यह पर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष के चतुर्दशी के मनाया जाता है ।
- इस पर्व मे देवो को जागृत किया जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- इस पर्व के बाद ही विवाह हेतु कन्या अथवा वर देखने की प्रथा आरंभ की जाती है ।

18. भाई भीख

विशेषता –

- यह पर्व मुण्डा जनजाति के द्वारा साल मे एक बार मनाया जाता है।
- इस पर्व मे बहन अपने भाई के घर से भिक्षा मांग कर अनाज लाती है तथा एक निश्चित दिन निमंत्रण देकर उसे अपने घर पर भोजन कराती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

19. छठ

विशेषता – यह झारखंड राज्य का अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है ।

- छठ पर्व वर्ष मे दो बार मार्च और नवबंर मे मनाया जाता है ।
- इस पर्व के दौरान सूर्य भगवान की पूजा करते हुए उन्हे अर्ध्य अर्पित किया जाता है ।
- यह पर्व अस्त होते हुए सूर्य को प्रसन्न करने हेतु मनाया जाता है ।
- इस पर्व के दौरान प्रसाद हेतु मिठाई (व्यंजन) के रूप मे 'ठेकुआ'का वितरण किया जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

20. हेरो पर्व

- हेरो शब्द का अर्थ छींटना या बुआई करना होता है।
- इस पर्व का आयोजन मुख्तयतः हो जनजाति द्वारा माधे व बाहा पर्व के बाद किया जाता है ।
- यह पर्व कोल्हान क्षेत्र मे जनजाति द्वारा मनाया जाता है ।
- यह पर्व खेतो मे बोये गए बीज की सुरक्षा हेतु मनाया जाता है । ऐसी मान्यता है कि इस पर्व का आयोजन नही किए जाने पर कृषि को नुकसान होता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

21. जावा पर्व

- इस पर्व का आयोजन भादो माह मे किया जाता है ।
- यह पर्व अविवाहित आदिवासी युवतियो मे प्रजनन क्षमता मे वृद्धि तथा अच्छे वर हेतु मनाया जाता है ।

22. भगता पर्व

- यह पर्व बसंत एवं ग्रीष्म ऋतु के मध्य मनाया जाता है ।
- यह पर्व तमाड़ क्षेत्र मे प्रचलित है ।
- इस पर्व को सरना मंदिर मे 'बुढा बाबा के पूजा ' के रूप मे मनाया जाता है ।
- इस दिन लोग उपवास रखते है तथा गांव के पुजारी को कंधे पर उठाकर सरना मंदिर ले जाते है ।

23. सेंदरा पर्व

- सेंदरा उराँव जनजाति की संस्कृति एवं परंपरा से संबिधित है ।
- सेंदार का शाब्दिक अर्थ – शिकार होता है ।
- उराँव जनजाति मे महिलाओं द्वारा शिकार खेलने की प्रथा को 'मुक्का सेंदरा ' के नाम से जाना जाता है । इस पर्व के दौरान महिलाएं पूरे दिन पुरूष के कपड़े पहनकर पशुओं का शिकार करती है ।
- यह पर्व उराँव ो की आत्मरक्षा युद्ध विद्या , भोजन , व अन्य जरूरतो की पूर्ति से संबंधित है ।
- उराँव जनजाति के लोग प्रत्येक वर्ष वैशाख मे सेंदरा , फागुन मे फागु सेंदरा तथा वर्षा ऋतु के प्रांरभ होने पर जेठ शिकार कहते है ।

CAREER FOUNDATION
जन राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

24. बंदना पर्व :–

- इस पर्व का आयोजन कार्तिक अमावस्या के दौरान सप्ताह भर किया जाता है ।
- इस पर्व की शुरूआत ओहिरा गीत के साथ की जाती है ।
- यह त्योहार मुख्यतः पालतु जानवरो से संबंधित है ।
- इसमें कपड़ो तथा गहनो से जानवरों को सजाया जाता जाता है । साथ ही प्राकृतिक रंगो द्वारा जानवारों पर लोक कलाकृति भी अंकित किया जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

25. रोहिन / रोहिणी

- यह त्योहार झारखंड राज्य मे कैलेंडर वर्ष का प्रथम त्योहार है ।
- यह त्योहार बीज के बोने के रूप मे जाना जाता है ।
- इस त्योहार के प्रारंभ के दिन से किसान द्वारा खेतो मे बीज बोने की शुरूआत की जाती है ।
- इस त्योहार को मनाने के दौरान किसी प्रकार का नृत्य प्रदर्शन या लोकगीत गायन नही किया जाता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

26. जनी शिकार

- इस पर्व के दौरान महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से पुरूषों का वेश धारण करके परंपरागत हथियार से जानवरों का शिकार किया जाता है
- इस दौरान महिलांए बच्चों को बेतरा (बच्चों को पीठ पर बांधने वाला एक कपड़ा)से अपनी पीठ पर बांधकर शिकार के लिए निकलती है ।
- शाम के समय मे किए गए शिकार को अखड़ा मे पकाया जाता है तथा पाहन द्वारा सभी को पका हुआ मांस वितरित किया जाता है ।
- यह भारत मे केवल झारखंड राज्य मे ही मनाया जाता है ।
- यह पर्व 12 वर्ष के अंतराल पर मनाया जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

27. सावनी पूजा –

- यह पूजा श्रावण माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी की मनायी जाती है ।
- इसमें बकरे की बलि देकर देवी पूजा की जाती है । हड़िया का तपान चढाया जाता है ।

28. देशाऊली

- यह 12 वर्ष मे एक बार मनाया जाने वाला उत्सव है ।
- इस त्योहार मे भुंईहरदारी की ओर से मरांग बुरू देवता को काड़ा (भैंसा) की बलि दी जाती है तथा बलि का जमीन मे गाड़ दिया जाता है ।

अन्य प्रमुख त्योहार

पर्व त्योहार	जनजाति	विशेषता
सकरात	संथाल	घर–परिवार की कुशलता के लिए पूस माह मे मनाया जाने वाला पर्व
बाहा	संथाल	फागुन माह मे शुद्ध जल से खेली जाने वाली होली
मुक्का सेन्द्रा		इस त्योहार के दौरान जनजाति महिलाएं पुरूष के कपड़े पहनकर दिन भर पशुओं का शिकार करती है।
एरोक	संथाल	आषाढ महीने मे बीज बोते समय मनाया जाने वाला पर्व
जतरा	उराँव	जेठ ,अगहन एवं कार्तिक माह मे

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

		मनाया जाने वाला पर्व
कुटसी	असुर	लोहा गलाने के उद्योग की उन्नति हेतु मनाया जाता है ।
गांगी आड़या	माल पहाड़िया	भादो माह मे नई फसल कटने पर मनाया जाने वाला पर्व
जंकोर पूजा	खड़िया	खड़िया जनजाति का वसंतोत्सव

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का